बिहार में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के सुदृढ़ीकरण एवं उसके जनाधार को विकसित करने में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की भूमिका (1911ई०-1947ई०)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा
के इतिहास (सामाजिक विज्ञान संकाय)
में पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रारूप

शोध पर्यवेक्षक

डॉ० अमीर अली खान
एसोसिएट प्रोफेसर
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

शोधार्थी

विपुल कुमार वर्मा
वर्ग क्रमांक– 32
विश्वविद्यालय क्रमांक–E2210068

शोध परियोजना का प्रारूप

1. शोध का शीर्षक–

बिहार में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के सुदृढ़ीकरण एवं उसके जनाधार को विकसित करने में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की भूमिका (1911ई०-1947ई०)

2. प्रस्तावना/शोध के मुद्दे–

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद आधुनिक भारत के प्रमुख निर्माताओं में से एक थे। वे एक अग्रणी स्वतंत्रता सेनानी, प्रख्यात विधिवेत्ता, वाक्पटु सांसद, सुयोग्य प्रशासक, श्रेष्ठ राजनेता होने के साथ-साथ महान मानवतावादी भी थे। महात्मा गाँधी के पक्के अनुयायी होने के साथ-साथ वे भारतीय संस्कृति की सभी उत्तम विशेषताओं से युक्त थे। 5मई, 1964 ई० को संसद के केन्द्रीय कक्ष में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के चित्र के अनावरण के अवसर पर तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि :

"...अनेक वर्षों तक वे गाँधी जी से सम्बद्ध रहे और उनके साथ कार्य किये। गाँधी जी द्वारा भारत में अपना मिशन आरंभ किए जाने के समय से लेकर गाँधी जी की मृत्यु के पश्चात् तक, जब तक वे भारत के राष्ट्रपति के रूप में रहे, उनका जीवन सेवा के प्रति समर्पित रहा...।"[1]

संविधान सभा के अध्यक्ष और तत्पश्चात लगातार दो कार्यकाल तक भारत के राष्ट्रपति के रूप में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने राष्ट्र की दशा-दिशा निर्धारित करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, जिन्हें प्यार से 'राजेन बाबू' कहा जाता था, का जन्म 3 दिसंबर, 1884ई०[2] को बिहार के सारण (अब सीवान) जिले के जीरादेई गाँव में हुआ था। एक समृद्ध परिवार से होते हुए भी, उनके

1. 'दि जर्नल ऑफ पार्लियामेंट इन्फॉमेशन', वॉल्यूम– X, 1964, पृ० सं० 12
2. दत्त, डॉ० के०के०– 'आधुनिक भारत के निर्माता : राजेन्द्र प्रसाद', प्रकाशन विभाग दिल्ली, 1978, पृ०सं० 2

पिता महादेव सहाय और माता कमलेश्वरी देवी का जीवन बहुत सादा और सरल था। शांति और पवित्रता से ओत प्रोत गाँव और घर के वातावरण का बालक "राजेन" के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा जिसके परिणामस्वरूप कालांतर में उनमें सहानुभूति, निःस्वार्थ सेवा, त्याग, विनम्रता और सादगी के आदर्श गुण दृष्टिगोचर हुए।

राजेन्द्र प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा ग्रामीण परिवेश में ही हुई। माध्यमिक स्तर की शिक्षा छपरा के हाई स्कूल से प्राप्त करने के बाद उन्होंने प्रसिद्ध प्रेसीडेंसी कॉलेज, कलकत्ता में प्रवेश लिया। शीघ्र ही वे कॉलेज यूनियन के सेक्रेटरी चुने गए।

1905ई० में छात्र जीवन में ही कलकत्ता में बंग-भंग आंदोलन से डॉ० राजेन्द्र प्रसाद प्रभावित हुए। कलकत्ता में ही राष्ट्रीय शिक्षा की बड़ी संस्था डॉन सोसायटी की सभाओं में भी वे जाया करते थे, परंतु वे अपनी पढ़ाई के कारण इससे पूर्णतः जुड़े हुए नहीं थे। कलकत्ता में एम०ए० और बी०एल० की पढ़ाई के दौरान ही स्वदेशी आंदोलन का राजेन्द्र बाबू के साथ-साथ कुछ बिहारी छात्रों पर भी प्रभाव पड़ा। उस समय बिहार के छात्र बिहारी क्लब में विचार विमर्श किया करते थे। इन लोगों ने पटना में बिहारी छात्रों का एक सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें बिहार के सभी स्कूल-कॉलेज के छात्र उत्साह से शामिल हुए। राजेन्द्र प्रसाद, सच्चिदानन्द सिन्हा, बाबू महेशनारायण, बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद आदि प्रमुख रूप से इससे जुड़े थे। 1906ई० में स्थापित यह सम्मेलन 1920ई० में असहयोग आंदोलन की शुरुआत तक प्रतिवर्ष चलता रहा। यह छात्र सम्मेलन नयी जागृति तथा नया जीवन पूरे प्रदेश में जागृत कर असहयोग आंदोलन को मजबूती प्रदान किया।

दिसम्बर 1906ई० में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में सर्वप्रथम राजेन्द्र प्रसाद स्वयंसेवक (वालंटियर) के रूप में शामिल हुए। सौभाग्य से उन्हें काँग्रेस पंडाल की ड्यूटी मिली थी, जिससे राष्ट्रीय काँग्रेस के विभिन्न गतिविधियों से वे अवगत हुए। इसी अधिवेशन के बाद काँग्रेस के प्रति उनकी

श्रद्धा बढ़ी। वे 1911ई० में काँग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटी के सदस्य बने और जीवनपर्यंत बने रहे।

20वीं सदी के प्रथम दशक में काँग्रेस का संगठन कमजोर था। बिहार में बहुत कम लोग इससे जुड़े थे। इसलिए 1908ई० में प्रांतीय काँग्रेस कमिटी का स्थापना किया गया, जिसके अध्यक्ष सर अली इमाम थे। प्रांतीय काँग्रेस कमिटी का मुख्यालय पटना में था और विभिन्न जिलों में उसकी शाखाएँ थी।

पटना यूनिवर्सिटी बिल के विरोध में राजेन्द्र प्रसाद ने बाबू वैद्यनाथ नारायण सिंह के साथ संगठित आँदोलन का संचालन किया। काँग्रेस के लखनऊ अधिवेशन (1916ई०) में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के प्रयास से ही पटना यूनिवर्सिटी बिल को कुछ संशोधन के साथ सर्वसम्मति से पारित किया गया। यह पहला अवसर था, जब बिहार में ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध इतना बड़ा आंदोलन डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के नेतृत्व में चलाया गया और इसमें सफलता भी मिली। 1916ई० में पटना उच्च न्यायालय की स्थापना के बाद डॉ० राजेन्द्र प्रसाद वकालत के लिए बिहार आ गए तब लोगों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ और वे भी सार्वजनिक कार्यों में अत्यधिक दिलचस्पी लेने लगे। थोड़े ही दिनों में राजेन्द्र प्रसाद को बिहार प्रांतीय काँग्रेस कमिटी का सहकारी मंत्री बना दिया गया। बाद में वे इस कमिटी के मंत्री भी बनाये गये।

राजेन्द्र प्रसाद एक साधारण कार्यकर्ता के रूप में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस में शामिल हुए और विभिन्न पदों पर रहते हुए चार दशक से भी अधिक अवधि तक संगठन की सेवा की। उनके लिए भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस, जनता की सेवा और भारत की स्वतंत्रता के निमित्त संघर्ष का साधन थी। यहाँ तक कि जब उनकी वकालत अच्छी चल रही थी, तब भी उन्होंने काँग्रेस को अपना अमूल्य समय दिया।

राजेन्द्र प्रसाद 1917ई० में चम्पारण सत्याग्रह के समय महात्मा गाँधी के सम्पर्क में आए। इसके बाद उनका संपूर्ण जीवन ही बदल गया। महात्मा गाँधी के मार्गदर्शन में उन्होंने बिहार में कई आंदोलनों को नई दिशा दी जिनका लक्ष्य राष्ट्र की स्वतंत्रता और आर्थिक आत्मनिर्भरता थी। रौलेट एक्ट (1918ई०) और

जलियाँवाला बाग हत्याकांड (1919ई०) के विरोध में 1920ई० में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के नागपुर वार्षिक अधिवेशन में काँग्रेस ने अपने अंतिम लक्ष्य के रूप में स्वराज की घोषणा की तथा असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव पारित किया। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद बिहार के पहले ऐसे नेता थे जिन्होंने इस प्रस्ताव पर अपना हस्ताक्षर किया। इस आन्दोलन की योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में लोगों को जागरूक करने हेतु उन्होंने संपूर्ण बिहार का भ्रमण भी किया।

असहयोग आंदोलन के दौरान ही बिहार में पटना-गया- रोड पर राजेन्द्र बाबू के प्रयास से 1921ई० में एक राष्ट्रीय महाविद्यालय बिहार विद्यापीठ की स्थापना की गई। राजेन्द्र प्रसाद इसके प्रधानाचार्य तथा मजहरुल-हक कुलपति हुए।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने बिहार में नमक सत्याग्रह (1930ई०-1934ई०) का साहस और दृढ़ता के साथ नेतृत्व किया, इस क्रम में उन्हें जेल भी जाना पड़ा। 1937ई० में प्रांतों में काँग्रेसी मंत्रिमंडल के गठन में भी उन्होंने पथ-प्रदर्शक का कार्य किया। 1942ई० की अगस्त क्रांति के दौरान भी वे भारत की आजादी हेतु तत्पर रहे तथा अस्वस्थ होने के बावजूद उन्हें लगभग 3 वर्षों तक बांकीपुर जेल में रहना पड़ा।

काँग्रेस कमिटी द्वारा उन्हें 1934ई०, 1939ई० तथा 1947ई० में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। 1946ई० में राजेन्द्र प्रसाद को पंडित जवाहर लाल नेहरु की अंतरिम सरकार में खाद्य और कृषि मंत्री बनाया गया।। 1946ई० के प्रांतीय परिषद् के चुनाव में भी उन्होंने पूरे बिहार का दौरा किया और इसी वर्ष जब संविधान निर्माण हेतु संविधान सभा का गठन किया गया, तो न सिर्फ उन्हें बिहार प्रांत से इस सभा का सदस्य चुना गया, बल्कि इसके अध्यक्ष पद की महती जिम्मेदारी भी सौंपी गई। 26 जनवरी 1950ई० को स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने पदभार ग्रहण किया।

बिहार में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने किया। उन्होंने विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जैसे- चरखा तथा खादी प्रचार-प्रसार, हिन्दू-मुस्लिम

एकता आदि। राजेन्द्र प्रसाद स्वतंत्रता संघर्ष के अतिरिक्त गरीब व सुख-सुविधाओं से वंचित लोगों के उत्थान के लिए भी कार्य किए। 1934ई० के विनाशकारी भूकंप में उनके निःस्वार्थ समाजसेवा से प्रभावित होकर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें जेल से रिहा करने का निर्णय लिया। रिहा होने के पश्चात् उन्होंने भूकंप से त्रस्त लोगों की मदद हेतु राहत समिति का नेतृत्व किया। 1914ई० में बिहार–बंगाल की बाढ़ तथा 1934ई० में बिहार में आए भूकंप में उनके द्वारा किए गए सेवा कार्य की प्रशंसा करते हुए महात्मा गाँधी ने लिखा था कि :

“ राजेन्द्र बाबू के नेतृत्व का अपने प्रांत पर जो प्रभाव है वैसा किसी प्रांत पर किसी नेता का नहीं है। उन्होंने भूकंप के दिनों में अपनी सेवा के लिए जो ख्याति और विश्वास प्राप्त किया, उसके कारण वे सारे देश में विश्वास के पात्र बन गये। बिहार के वे शांतिदूत हैं और मेरी आशा है कि वे बिहार के माध्यम से पूरे भारत के शांतिदूत बनेंगे।” [1]

भागलपुर में हिन्दु-मुस्लिम दंगा को समाप्त करने में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। 1946 ई० में हो रहे सांप्रदायिक दंगों के रोकथाम हेतु पटना मैदान में एक विशाल सभा को संबोधित करते हुए राजेन्द्र बाबू ने कहा कि :

“मानवता की पुकार है कि लूट, आगजनी और हत्या का यह तांडव तुरंत बंद किया जाय। इसके लिए चाहे कितना भी बलिदान करना पड़े।” [2]

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद एक उच्चकोटि के साहित्यकार भी थे। उन्होंने हिंदी साप्ताहिक पत्रिका “देश” और अंग्रेजी पाक्षिक पत्रिका “सर्चलाइट” का संपादन किया, साथ ही “इंडिया डिवाइडेड”, “आत्मकथा” तथा “सत्याग्रह इन चंपारण” सहित कई पुस्तकें भी लिखीं। 1962ई० में राष्ट्रपति पद से मुक्त होकर डॉ०

1. अवस्थी, डॉ० ए०, अवस्थी, डॉ० आर०के०– ‘आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन’, रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर, पृ०सं० 316
2. दत्त, डॉ० के०के०– ‘बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास–3’, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना 1974, पृ०सं० 330

राजेन्द्र प्रसाद सदाकत आश्रम (मजहरुल हक द्वारा स्थापित), पटना आ गये, जहाँ 28 फरवरी 1963ई० को उनका देहावसान हो गया। उन्हें उसी वर्ष देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न" प्रदान किया गया।

जब देश में स्वतंत्रता की लड़ाई तेजी से आगे बढ़ रही थी, उसी समय भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस भी बिहार में अपने जनाधार को मजबूत करने का प्रयास कर रही थी। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की काँग्रेस में सक्रिय भूमिका ने बिहार में पार्टी के नेतृत्व को मज़बूती प्रदान की। उन्होंने पार्टी को बिहार के विभिन्न क्षेत्रों तक ले जाने के लिए कई रचनात्मक कदम उठाए। उनकी कार्यशैली ने जनता के बीच राष्ट्रीय काँग्रेस के प्रति विश्वास और समर्थन को बढ़ावा दिया, जिससे बिहार में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के जनाधार में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। इतिहासकार डॉ० के०के० दत्त के अनुसार– 1929ई० तक बिहार प्रांत में काँग्रेस के सदस्यों की संख्या 90,525 हो गई थी।[1]

इनकी दूरदर्शिता, समाजसेवा में योगदान और संघर्षशीलता ने बिहार को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाया। प्रस्तुत शोध-कार्य इस दिशा में एक नवीन प्रयास होगा।

3. पूर्व अध्ययन की समीक्षा–

इस संदर्भ में कई बहुमूल्य शोध कार्य हुए हैं। डॉ० के० के० दत्त– "बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास", 3 खंडों में, डॉ० बी० पट्टाभि सीतारमैय्या– "हिस्ट्री ऑफ इंडियन नेशनल काँग्रेस", 3 खंडों में, निर्मल कुमार– "डॉ० राजेन्द्र प्रसाद एण्ड इंडियन फ्रीडम स्ट्रगल (1917ई०-1947ई०)", डॉ० के०के० दत्त– "आधुनिक भारत के निर्माता– डॉ० राजेन्द्र प्रसाद", पी०एन० ओझा– "हिस्ट्री ऑफ इंडियन नेशनल काँग्रेस इन बिहार (1885ई०-1985ई०)", रवि बाला अग्रवाल– "डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के सामाजिक और

1. दत्त, डॉ० के०के०– 'बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास–2', बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना 1974, पृ०सं० 12

राजनीतिक विचार एवं भारतीय राजनीति में उनका योगदान", मानसी चक्रवर्ती– "राजेन्द्र प्रसाद एण्ड द इंडियन नेशनल मूवमेंट", के०एल० पंजाबी– "राजेन्द्र प्रसाद-फर्स्ट प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया", डॉ० यदुनन्दन प्रसाद– "देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का जीवनवृत", नीलिमा भारती– "देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद के राजनीतिक चिंतन" तथा अर्चना ठाकुर– "सोशियो-इकोनॉमिक फिलॉसफी ऑफ डॉ० राजेन्द्र प्रसाद"।

उपरोक्त पुस्तकों में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के जीवन, बिहार में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की गतिविधि, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रीय काँग्रेस तथा डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की भूमिका के साथ-साथ राष्ट्रपति के रूप में उनके कार्यों की विस्तृत चर्चा की गई है किन्तु बिहार में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस को सुदृढ़ करने एवं उसके जनाधार को विकसित करने में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के अमूल्य योगदान और उनके सामाजिक, शैक्षिक तथा जनकल्याणकारी कार्यों की विस्तृत व्याख्या नहीं प्राप्त होती है। अतः यह शोध विषय महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

4. अध्ययन का उद्देश्य, महत्व एवं प्रासंगिकता–

प्रस्तावित शोध कार्य में बिहार में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के आविर्भाव एवं विस्तार का एतिहासिक विश्लेषण किया जाएगा। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस एवं डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के साथ-साथ बिहार के अन्य राष्ट्रवादी नेताओं का भी अमूल्य योगदान रहा है। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने बिहार में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। बिहार के गाँव-गाँव तक राष्ट्रीय काँग्रेस के जनाधार को स्थापित करने में उनकी भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। अत: प्रस्तुत अध्ययन में बिहार में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के सुदृढ़ीकरण तथा उसके जनाधार को विकसित करने में राजेन्द्र बाबू की भूमिका का एतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण किया जाएगा।

5. ज्ञान के क्षेत्र में योगदान–

प्रस्तुत शोध-कार्य बिहार में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस को सशक्त बनाने में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की भूमिका पर केन्द्रित है जिसका शोध के क्षेत्र में निम्नलिखित योगदान होगा–

i) इस शोध-कार्य से इतिहास विषय के शोधार्थी 20वीं शताब्दी के बिहार के सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों से अवगत होंगे।

ii) इससे शोधार्थियों को डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के सामाजिक, राजनीतिक व रचनात्मक कार्यों से संबंधित शोध-कार्यों में सहायता मिलेगी।

iii) बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के विभिन्न गतिविधियों के मूल्यांकन में सहायक सिद्ध होगा।

iv) यह शोध-कार्य प्राथमिक स्रोत– समकालीन पुस्तक, पत्र-पत्रिका, कॉरेस्पोन्डेंस लेटर और डायरी पर आधारित होगा, जिससे नये शोधकर्ता को मदद मिलेगी।

6. अध्ययन क्षेत्र–

प्रस्तुत अध्ययन मूल रूप से डॉ० राजेन्द्र प्रसाद और बिहार में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस पर केन्द्रित है। अध्ययन के क्रम में बिहार में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस को सुदृढ़ करने तथा उसके जनाधार को विकसित करने में देशरत्न राजेन्द्र बाबू की भूमिका का अन्वेषण एवं विश्लेषण किया जाएगा। वस्तुतः भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की नीतियों एवं कार्यक्रमों तथा बिहार के जनजागरण पर उसके प्रभाव का एवं डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के राजनीतिक जीवन के विविध आयामों का बिहार के संदर्भ में संक्षिप्त ऐतिहासिक अध्ययन भी होगा।

7. अध्ययन पद्धति–

इस शोध का उद्देश्य 20वीं सदी के इतिहासकारों के कार्यों का अध्ययन करना है। यह अध्ययन वर्णनात्मक होने के साथ–साथ तुलनात्मक भी होगा, जिसमें प्राथमिक स्रोत का उपयोग किया जाएगा। मैं अपने शोध विषय से संबंधित सभी मौजूद हिन्दी और अंग्रेजी स्रोतों का उपयोग करने का प्रयास करूँगा, दूसरी ओर शोध को और अधिक सार्थक बनाने के लिए हिन्दी और अंग्रेजी में उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों की शुद्धता के साथ उपयोग किया जाएगा। इस उद्देश्य के लिए निम्नलिखित तरीके लागू होंगे–

1. प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के लिए सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण।
2. अध्ययन सामग्री का संग्रह।
3. उनके लेखन का सावधानीपूर्वक और विश्लेषणात्मक विश्लेषण।
4. उनके समकालीन लेखन का आलोचनात्मक अध्ययन।
5. इंटरनेट आधारित स्रोतों का समुचित उपयोग।

8. स्रोत सामग्री की उपलब्धता–

प्रस्तुत शोध-कार्य के लिए डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के जीवन तथा भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की कार्यवाहियों से संबंधित समकालीन दस्तावेज उपलब्ध हैं। बिहार में भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस के विभिन्न सभाओं, नीतियों, कार्यक्रमों, प्रचारक गतिविधियों से संबंधित विभिन्न मूल दस्तावेजों का प्राथमिक स्रोत के रूप में प्रयोग किया जाएगा।

वर्तमान अध्ययन बिहार में भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस के सुदृढ़ीकरण एवं उसके जनाधार को विकसित करने में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की भूमिका के विविध पहलुओं के अन्वेषण से संबंधित है। इस विषय पर स्रोत

सामग्री हेतु विभिन्न संस्थाओं, कॉंग्रेस कार्यालयों, पुस्तकालयों जैसे- केन्द्रीय पुस्तकालय, ल०ना० मि०वि०, दरभंगा; खुदाबक्श लाइब्रेरी, पटना; सदाकत आश्रम, पटना; बिहार विद्यापीठ, पटना; के०पी० जायसवाल शोध संस्थान, पटना एवं ए०एन०सिन्हा समाज अध्ययन संस्थान, पटना में उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग किया जाएगा। राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, बिहार राज्य अभिलेखागार, पटना में सुरक्षित विभिन्न प्राथमिक दस्तावेज और स्रोत भी सहायक सिद्ध होंगे।

9. परिकल्पना–

प्रस्तुत शोध-कार्य इस परिकल्पना पर आधारित है कि बिहार में भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस को सुदृढ़ करने में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का अप्रतिम योगदान रहा है। डॉ० राजेन्द्र बाबू भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस के संदेशों को बिहार के घर-घर तक पहुँचाकर राष्ट्रीय कॉंग्रेस का व्यापक जनाधार तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाये। उन्होंने बिहार में राष्ट्रवादी ताकतों को एकजुट कर स्वाधीनता आंदोलन को भी मजबूत आधार प्रदान किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का बिहार में नेतृत्व करते हुए इसकी रूपरेखा को तैयार करने तथा विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में भी उनका अमूल्य योगदान रहा। उनके समकालीन नेताओं ने भी राष्ट्रीय कॉंग्रेस के उत्थान में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित होने के बाद डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने विभिन्न स्तर पर सामाजिक, शैक्षिक एवं जनकल्याणकारी कार्य किए।

10. कार्ययोजना–

प्रस्तुत शोध–कार्य में निम्नलिखित अध्याय होंगे–

अध्याय– 1 : भूमिका

अध्याय– 2 : डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का संक्षिप्त जीवन परिचय तथा राजनीति में प्रवेश

अध्याय– 3 : भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस का उद्‌भव, संगठनात्मक ढाँचा तथा विस्तार–बिहार के संदर्भ में

अध्याय– 4 : महात्मा गाँधी के विचारों का डॉ० राजेन्द्र प्रसाद पर प्रभाव

अध्याय– 5 : डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के सामाजिक, शैक्षिक एवं जनकल्याणकारी कार्य

अध्याय– 6 : बिहार में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के सुदृढ़ीकरण तथा उसके जनाधार को विकसित करने में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की भूमिका

अध्याय– 7 : निष्कर्ष

11. संदर्भ ग्रंथ सूची–

(क) प्राथमिक स्रोत–

1. बिहार राज्य अभिलेखागार, पटना, गाँधी संग्रहालय, पटना तथा राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली से प्राप्त समकालीन पत्र-पत्रिका, कॉरेस्पोन्डेंस लेटर और डायरी
2. प्रोसिडिंग्स एंड रिपोर्ट्स ऑफ दि बिहार प्रोविंसियल काँग्रेस कमिटी (1908ई०-1947ई०)
3. बिहार प्रांतीय काँग्रेस कमिटी बुलेटिंग, सदाकत आश्रम, पटना (1908ई०-1947ई०)
4. बिहार प्रांतीय काँग्रेस कमिटी का डिबेट्स (1908ई०-1947ई०)

5. प्रसाद, डॉ० राजेन्द्र – 'आत्मकथा', नई दिल्ली- 1957ई०

6. प्रसाद, डॉ० राजेन्द्र – 'महात्मा गाँधी एण्ड बिहार', दिल्ली- 1947ई०

7. प्रसाद, डॉ० राजेन्द्र – 'सत्याग्रह इन चंपारण', अहमदाबाद- 1949ई०

8. प्रसाद, डॉ० राजेन्द्र – 'गाँधी इन चंपारण', नई दिल्ली- 1947ई०

9. प्रसाद, डॉ० राजेन्द्र – 'इंडिया डिवाइडेड', बॉम्बे- 1946ई०

10. गाँधी, एम०के० – 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' (आत्मकथा), अहमदाबाद- 1947ई०

(ख) द्वितीयक स्रोत–

1. डॉ० ताराचंद – 'हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया', Vol- 4, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली- 1961ई०-1973ई०

2. सीतारमैय्या, डॉ० बी० पट्टाभि – 'हिस्ट्री ऑफ इंडियन नेशनल काँग्रेस', खण्ड-1, प्रकाशन विभाग, दिल्ली- 1984ई०

3. दत्त, डॉ० के०के० – 'बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास', खण्ड-1–3, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना- 1974ई०

4. दत्त, डॉ० के०के० – 'गाँधी जी इन बिहार', गवर्नमेंट ऑफ बिहार, पटना- 1969ई०

5. दत्त, डॉ० के०के० – 'आधुनिक भारत के निर्माता : राजेन्द्र प्रसाद', प्रकाशन विभाग, दिल्ली- 1978ई०

6. ओझा, पी०एन० – 'हिस्ट्री ऑफ इंडियन नेशनल काँग्रेस इन बिहार' (1885ई०–1985ई०), (के०पी० जायसवाल इंस्टीट्यूट, पटना)- 1985ई०

7. श्रीवास्तव, डॉ० एन०एम०पी० – 'बिहार में राष्ट्रीयता का विकास' (बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना)- 1988ई०

8. हेनिंघम, स्टीफन – 'पीजेंट्स मूवमेंट्स इन कोलोनियल इंडिया', नॉर्थ बिहार- 1917ई०- 1942ई०

9. दिवाकर, आर०आर० – 'बिहार थ्रू द एजेज', ओरियंट लॉगमैन्स, कलकत्ता- 1959ई०

10. प्रसाद, डॉ० यदुनन्दन – 'देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद का जीवनवृत', बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी- 1994ई०

11. चन्द्र, डॉ०बिपन – 'भारत का स्वतंत्रता संघर्ष', हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली- 1990ई०

12. एस० गजरानी एण्ड एस० राम – 'डॉ० राजेन्द्र प्रसाद', अर्जुन पब्लिशिंग हाउस- 2009ई०

13. जायसवाल, अनुराधा – 'हिस्ट्री ऑफ द सदाकत आश्रम', पटना- 2003ई०

14. चक्रवर्ती, मानसी – 'राजेन्द्र प्रसाद एंड द इंडियन नेशनल मूवमेंट', कोलकाता- 2007ई०

15. कुमार, निर्मल – 'राजेन्द्र प्रसाद एंड इंडियन फ्रीडम स्ट्रगल (1917ई०–1947ई०)', नई दिल्ली- 1990ई०

शोध पर्यवेक्षक **शोधार्थी**

डॉ० अमीर अली खान
एसोसिएट प्रोफेसर
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

विपुल कुमार वर्मा